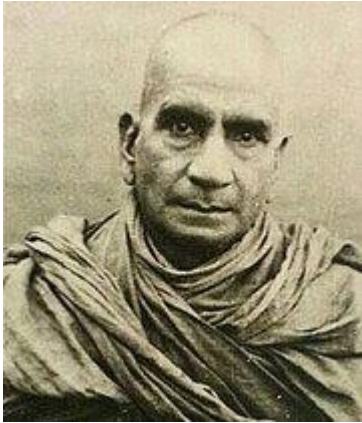


महर्षि दयानन्द के प्रमुख अनुयायी

स्वामी श्रद्धानंद



अमर स्वतंत्रता सेनानी, महान शिक्षाविद, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य शिष्यों में प्रमुख अनुयाई थे। महर्षि के उपदेश से प्रेरित होकर अपने गुरुकुलों की स्थापना की, स्त्री शिक्षा के लिए निरंतर कार्य किया, दलितों का उद्धार करने के लिए भारतीय शुद्धि सभा और बहकावे और प्रलोभन के शिकार मुस्लिम और ईसाई बने लाखों हिंदुओं की घर वापसी कराई। रालेट एक्ट के विरोध में संगीनों का सामना करते हुए सीना तानकर खड़ा होना, जामा मस्जिद से वेद मंत्र के उच्चारण से अपने भाषण का आरंभ करना आपकी निर्भीकता और अदम्य साहस का अद्भुत उदाहरण है। राष्ट्र सेवा और मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाले

स्वामी श्रद्धानंद के ऊपर धोखे से सरफिरे अब्दुल रशीद नामक व्यक्ति ने ताबड़तोड़ गोलियां चलाई और वे सदा के लिए अमर हो गए।

पंडित लेखराम



महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य शिष्य, आर्य समाज के महान चिंतक, प्रचारक, लेखक और समर्पित कार्यकर्ता पंडित लेखराम का जन्म 1858 में हुआ। आपने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। वे अहमदिया मुस्लिम समुदाय के नेता मिर्जा गुलाम अहमद से शास्त्रार्थ एवं उसके दुष्प्रचारों के खण्डन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। पंडित लेखराम ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हिंदुओं को धर्म-परिवर्तन से रोका व शुद्धि अभियान के प्रणेता बने। महर्षि के जीवनचरित् लिखने के उद्देश्य से भारत के अनेकानेक स्थानों का भ्रमण किया, अतः उनके नाम के साथ 'आर्य मुसाफिर' विशेषण के रूप में जुड़ गया। पं. लेखराम हिंदुओं को मुसलमान

होने से बचाते थे। एक कट्टर मुसलमान ने ३ मार्च सन् १८९७ को ईद के दिन, 'शुद्धि' कराने के बहाने, धोखे से लाहौर में उनकी हत्या कर दी।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी



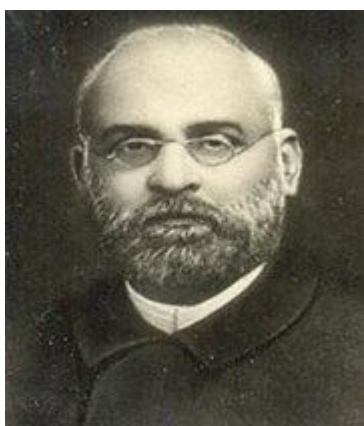
महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रमुख शिष्यों पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी का अपना अनुपम स्थान है। आपने न केवल महर्षि दयानंद सरस्वती के साक्षात् दर्शन करने का गौरव प्राप्त किया बल्कि उनके निर्वाण का दृश्य अपनी आंखों से देखा था। महर्षि की प्रेरणा से आपने अंग्रेजी पर प्रमुखता से अधिकार होते हुए भी संस्कृत व्याकरण में महारत हासिल की और कई प्रेरक ग्रंथों की रचना कर एक अद्भुत विद्वत्ता पूर्व कार्य किया। 26 वर्ष की छोटी सी आयु में कॉलेज में प्रोफेसर पद पर रहना, डीएवी जैसे शिक्षण संस्थान के संस्थापकों में अग्रणी भूमिका निभाना इत्यादि आपके ऐसे महान कीर्तिमान हैं जो युग युगांतरों औरकाल कालांतरों तक मानव समाज के बीच पथ प्रदर्शक की भूमिका अदा करते रहेंगे और आप चिरकाल तक देश और दुनिया को प्रेरित करते रहेंगे।

महात्मा हंसराज



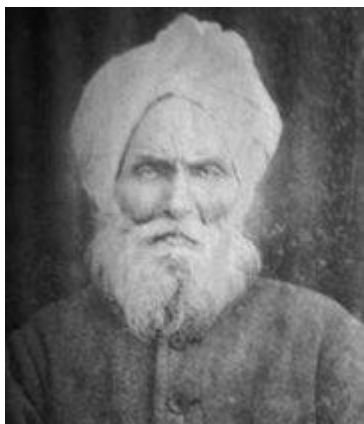
महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से प्रेरित, आर्य समाज के स्तंभ, परोपकारी स्वभाव के धनी, महान शिक्षाविद और समाजसेवी महात्मा हंसराज राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण के लिए आजीवन समर्पित रहे। आपने पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती जी की स्मृति में 1 जून 1986 को लाहौर में "दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल" की स्थापना करने का ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किया था। आप डीएवी कालेज के 25 वर्षों तक अवैतनिक प्राचार्य भी रहे और मानव निर्माण कर युवा शक्ति को सुदिशा प्रदान करते रहे। आपके जीवन में कई बार कठिन से कठिन विपत्तियों का सामना किया लेकिन कभी वैदिक धर्म, सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं से समझौता नहीं किया। आपने अपना संपूर्ण जीवन मानव सेवा को समर्पित कर दिया था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा



महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा सन १८७५, बम्बई में स्थापित आर्यसमाज के सदस्यों में प्रमुख श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारत राष्ट्र की स्वाधीनता में बहुमूल्य योगदान दिया है। वैसे तो आप महर्षि दयानंद जी प्रेरित होकर ऑक्सफोर्ड से एम.ए. और बार-एट-ला की उपाधियाँ प्राप्त करपुणे में संस्कृत के प्रोफेसर भी रहे। स्वातंत्र्यवीरसावरकर भी आपसे प्रेरित होकर क्रांतिकारी कार्यों में सम्मिलित हुए। लेकिन महर्षि दयानंद जी द्वारा सिखाई गई देशभक्ति के परिणाम स्वरूप आपने लन्दन में इण्डिया हाउस की स्थापना की जो इंग्लैंड जाकर पढ़ने वाले भारतीय छात्रों के परस्पर मिलन एवं विविध विचार-विमर्श का एक प्रमुख केन्द्र था। इस तरह इंग्लैंड में रहकर भी आपने भारत की आजादी के क्रांतिकारियों का निर्माण किया और भारत माता को स्वाधीन कराने का कीर्तिमान स्थापित किया।

सरदार अर्जुन सिंह



अमर शहीद सरदार भगत सिंह के पूज्य दादाजी सरदार अर्जुन सिंह जी ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के साक्षात् दर्शन करने का पुण्य प्राप्त किया था। महर्षि के वैदिक विचारों से प्रभावित होकर केवल आप ही नहीं बल्कि आपका पूरा परिवार आर्य समाजी बन गया। आप प्रतिदिन यज्ञ करते थे और हवन कुंड तथा सामग्री साथ लेकर यात्रा करते थे। आपने अपने पौत्र जगत सिंह और भगत सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान पंडित लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी कराया था और उन्हें देश की आजादी के लिए समर्पित करने का संकल्प और संस्कार भी प्रदान किए थे। आपने सिख गुरुओं को वेदों की परंपरा मानने वाले सिद्ध करने हेतु

उर्दू भाषा में प्रमाणित पुस्तक "गुरु साहिबान वेदों के पैरोकार थे" की रचना की और उसे वर्मन एंड कंपनी लाहौर से प्रकाशित कराया था। आप आजीवन महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज तथा वेदों का प्रचार करते रहे।

लाला लाजपत राय



पंजाब केसरी लाला लाजपत राय एक महान समाज सुधारक, शिक्षाशास्त्री और क्रांतिकारी थे। गरम दल के लाल बाल पाल की त्रिमूर्ति में से लाला लाजपत राय ने महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरणा पाकर अपना संपूर्ण जीवन देश की स्वतंत्रता, स्वदेशी शिक्षा और जन कल्याण में लगा दिया और अंततः ब्रिटिश सैनिकों की लाठियों के प्रहार से शहीद हो गए। सरदार भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद ने लाला जी की मौत का बदला लेकर ईंट का जवाब पत्थर से दिया। "पंजाब नेशनल बैंक " "लक्ष्मी इंश्योरेंस कंपनी" LIC , तिलक पीपल्स सोसायटी के संस्थापक लाला लाजपत राय ने लिखा है कि यदि मैं आर्य समाज में दाखिल न होता तो यह सच है कि मैं आज जो कुछ भी हूँ

वह न होता।

भाई परमानंद



महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की राष्ट्र भक्ति की शिक्षाओं से प्रेरित भाई परमानंद का जन्म 4 नवंबर 1876 को पंजाब के मोहयाल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे सिख शहीद भाई मतिदास के वंशज और कट्टर आर्यसमाजी थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए समर्पित अमेरिका में लाला हरदयाल की गदर पार्टी में वे सक्रिय रहे, 1913 में भारत लौटने के बाद उन्हें लाहौर षड़यंत्र मामले में उन्हें मृत्युदंड दिया गया, इसी खबर को पढ़कर पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने क्रांतिकारी बनने का फैसला किया था, उनके मृत्युदंड को लॉर्ड हॉर्डिंग ने उम्र कैद में बदला, बाद में वे लाहौर के नेशनल कॉलेज के चांसलर बने और हिंदू महासभा के अध्यक्ष भी रहे, पहले कट्टर आर्यसमाजी, फिर

क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी के रूप में भाई परमानंद हमेशा देशसेवा में लगे रहे।

पंडित राम प्रसाद बिस्मिल



"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है" इस अमर गीत को गाते हुए न जाने कितने युवा देश की आज़ादी के लिए हंसते हंसते फाँसी के फंदे पर झूलकर अमर हो गए। इस गीत के लेखक अमर शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल का बचपन बुरी आदतों से भरा था लेकिन जैसे ही वे आर्य समाज के संपर्क में आए और उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा तो उनका जीवन कुंदन बन गया, उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया और विभिन्न प्रांतों में देश भक्तों को हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के तले लाकर क्रांति का बिगुल बजाया। अंग्रेज़ी सरकार भारतीयों को लूटती थी, उन्होंने काकोरी स्टेशन के पास सरकारी खज़ाने को लूटकर ब्रिटिश सरकार को खुलेआम चुनौती दी। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए अंततः फाँसी के फंदे को गले लगाया।

खुदीराम बोस



आर्य समाज के राष्ट्रभक्त क्रांतिकारियों से प्रेरित खुदीराम बोस एक महान वीर बलिदानी थे। उन्होंने छात्र जीवन से ही स्वतंत्रता के आंदोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और और और ब्रिटिश साम्राज्य को ध्वस्त करने के लिए आपने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। भारत की आज़ादी के संकल्प की पूर्णता के लिए आपने पंफ्लैट बाँटकर प्रचार करने से लेकर अंग्रेज़ अत्याचारियों के ऊपर बम से भी प्रहार किए। 19 वर्ष की आयु में आप हँसते हँसते फाँसी पर चढ़ गए और उस समय आपकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि आपको अपना आदर्श मानकर देशवासियों ने आपके नाम से डिजाइन किनारी वाली धोती पहननी आरंभ कर दी थी।

करतार सिंह सराभा



लुधियाना पंजाब में जन्मे सरदार करतार सिंह सराभा आर्य समाज के महान वीर बलिदानियों में एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। आप अमेरिका में लाला हरदयाल जी के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से वहाँ आपने ग़दर पार्टी के अध्यक्षपद पर रहते हुए भारत की आज़ादी के लिए कार्य किया। आप भारत में अनेक क्रांतिकारियों के प्रेरक रहे और आपके ऊपर लाहौर में देशद्रोह का मुक़दमा चलाया गया और 19 वर्ष की छोटी आयु में आप हँसते हँसते शहीद हो गए।

सरदार अजीत सिंह



महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य शिष्य और अनुयाई सरदार अर्जुन सिंह के पुत्र तथा अमर स्वतंत्रता सेनानी सरदार भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह एक महान राष्ट्र भक्त थे। आपने अंग्रेजों की गलत नीतियों का खुलकर विरोध किया और लाला लाजपत राय के साथ देश निकाला की सजा भी काटी। आपने इरान से तुर्की, जर्मनी, ब्राजील, स्विट्जरलैंड, इटली, जापान आदि देशों में यात्रा करके आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को आपने हिटलर से मिलवाया, इस दौरान आपने 40 भाषाओं पर विजय प्राप्त की और जब 1947 में आप भारत आए तब आपकी पत्नी ने भी आपसे कई प्रश्न पूछे थे। 15 अगस्त 1947 को प्रातः 4 बजे

आप सदा के लिए अमर हो गए।

रास बिहारी बोस



आर्य समाजी क्रांतिकारियों की प्रेरणा से ब्रिटिश राज के विरुद्ध आजादी के लिए गदर षडयंत्र एवं आजाद हिन्द फौज के संगठन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले रास बिहारी बोस ने न केवल भारत में कई क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन किया अपितु विदेश में रहकर भी वह भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के प्रयास में आजीवन लगे रहे। दिल्ली में तत्कालीन वायसराय लार्ड चार्ल्स हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाने, गदर की साजिश रचने और बाद में जापान जाकर इंडियन इंडिपेंडेस लीग और आजाद हिंद फौज की स्थापना करने में रासबिहारी बोस की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने हिन्दू महासभा की जापानी शाखा की स्थापना भी की तथा इसके

अध्यक्ष बने। कालांतर में आप जापान के टोक्यो से भारत की स्वाधीनता के प्रति सेवा करते करते अमर हो गए।

सुखदेव थापर



भारत राष्ट्र की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों में सुखदेव थापर का अग्रिम स्थान है। आपका जन्म 15 मई 1907 को लुधियाना में श्री रामलाल जी के यहाँ आर्य समाजी परिवार में हुआ। आप हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य रहे और आपने राजगुरु और भगत सिंह के साथ मिलकर महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रमुख शिष्य लाला लाजपत राय की शहादत का बदला लेने के लिए जे पीसांडर्स की हत्या की थी। देशकी आजादी के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में आप लगातार सक्रिय रहे और 23 मार्च 1931 को आप फाँसी के फंदे पर झूल गए।

शिवराज हरि राजगुरु



भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक भगत सिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को हंसते हंसते फाँसी के फंदे को चूमकर अपना बलिदान देने वाले शिवराज हरि राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 को पुणे महाराष्ट्र में हुआ था। आपको भारत की आज़ादी के लिए समर्पित होने की प्रेरणा वाराणसी में विद्याध्ययन के समय आर्य समाजी संस्कारों से ओतप्रोत अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद से मिली थी।

चंद्रशेखर आज़ाद



मात्र 15 वर्ष की उम्र में ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हुए चंद्रशेखर आज़ाद ने 25 वर्ष की उम्र में स्वाभिमान से अमरता प्राप्त की थी। उनकी निडरता पर इन्हें आज़ाद के नाम से जाना जाता है, पंडित राम प्रसाद बिस्मिल आर्यसमाजी थे, इसलिए इनके साथ रहने से चंद्रशेखर आज़ाद पर भी आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव पड़ा और ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले चंद्रशेखर आज़ाद क्रांति के पथ पर चलते हुए देश को स्वतंत्र कराना चाहते थे। वे कहते थे लातों के भूत बातों से नहीं मानते, चंद्रशेखर आज़ाद थे, आज़ाद रहे और स्वराज के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने अपनी ही गोली से शहीद होकर यह सिद्ध किया कि आज़ाद कभी पराधीन होकर शहीद नहीं होते।

भाई बालमुकुंद



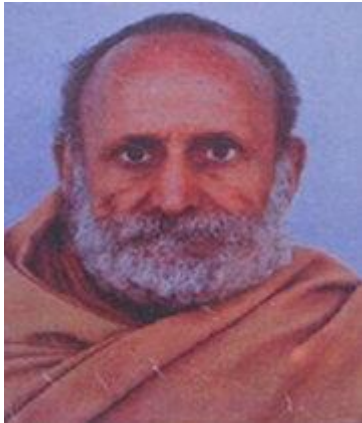
भाई बालमुकुंद (1889 - 8 मई 1915) महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य अनुयाई और महान क्रांतिकारी भाई परमानंद जी के चचेरे भाई बालमुकुंद गदर पार्टी के संस्थापक सदस्य थे। आपने भारतीय स्वाधीनता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछार कर दिया था। दिल्ली षडयंत्र मामले में उनकी अहम भूमिका के लिए ब्रिटिश हुकूमत द्वारा उन्हें मौत की सजा सुनाई गई और फाँसी पर लटका दिया गया ।

महात्मा नारायण स्वामी



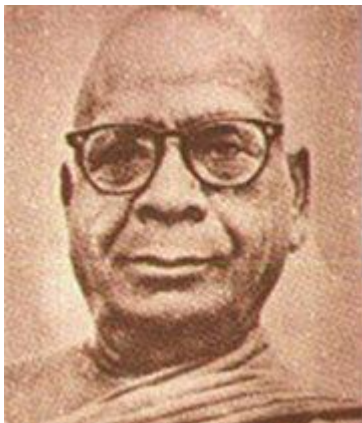
सन् 1865 ई. में अलीगढ़ में जन्मे महात्मा नारायण स्वामी जी का जीवन आर्यसमाज के इतिहास में कर्मशीलता का उज्ज्वल अध्याय है। उन्होंने महर्षि दयानन्द केमंतव्यों को समझने और परखनेके बादमानव सेवा और परोपकार के पथ पर पूरी निष्ठा के साथ समर्पित हो गए और आजीवन आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाते रहे।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती



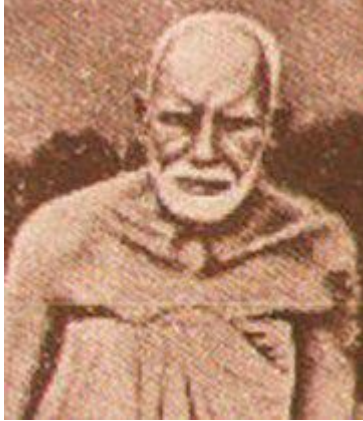
आर्य समाज के प्रसिद्ध गुरुकुल झज्जर के आचार्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती का जन्म मार्च, 1910में नरेला दिल्ली में हुआ। आपने एक महान स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, इतिहासकार और सामाजिक कार्यकर्ता केरूप में आदर्श स्थापित किया तथा गुरुकुल झज्जर का कुशलतापूर्वक संचालन करके मानव-निर्माण की अनुपम श्रृंखला चलाकर कीर्तिमान स्थापित किया है।

डॉ स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती



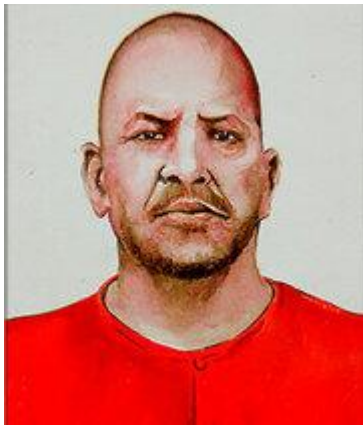
आर्य समाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का जन्म (24 सितम्बर 1905) को हुआ। वे भारत के रसायनविद्, आध्यात्मिक-धार्मिक चिन्तक, लेखक और वक्ता थे। उन्होंने जीवन का अधिकांश भाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन-विभाग के अध्यक्ष के रूप में बिताया। जीवन के उत्तरार्ध को उन्होंने आर्य समाज की परंपरा के अनुसार सामाजिक जागरण तथा लोकोपकार हेतु ग्रन्थों के लेखन में व्यतीत किया।

स्वामी सर्वदानन्द



स्वामी सर्वदानन्द जी का जन्म सन् 1855 में होशियारपुर, पंजाब में हुआ। आपके पूर्वज आयुर्वेदिक और यूनानी पद्धति से चिकित्सा किया करते थे लेकिन आप महर्षि दयानंद की प्रेरणा से आर्य समाज के विख्यात संन्यासी बन गये। आपने अलीगढ़ में एक ऐसे गुरुकुल का संचालन किया जिसमें पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी संस्कृत व्याकरण आदि पढ़ाते थे। इसी गुरुकुल में आर्य समाज दो प्रमुख विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक एवं आचार्य भद्रसेन जी भी पढ़े थे।

स्वामी वेदानंद तीर्थ



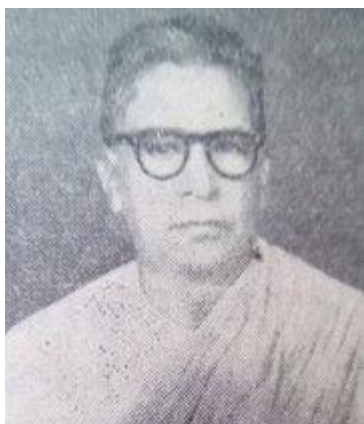
दिल्ली के प्रसिद्ध श्रीमददयानंद गुरुकुल महाविद्यालय खेड़ा खुर्द के संस्थापक, चुने हुए वेद मंत्रों के संग्रह पर आधारित “स्वाध्याय संदोह” के लेखक स्वामी वेदानंद तीर्थ जीकी संन्यास दीक्षा और वैदिक शिक्षा वाराणसी में हुई थी। महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज के प्रति आपकी निष्ठा भावना तथा मानव समाज के उपकार के लिए आपका समर्पण केवल स्तुत्य ही नहीं अनुकरणीय भी है। आपके जीवन से जुड़े अनेक प्रेरक संस्मरण अत्यंत रोचक और प्रेरणादाई सिद्ध होते हैं।

स्वामी भवानी दयाल



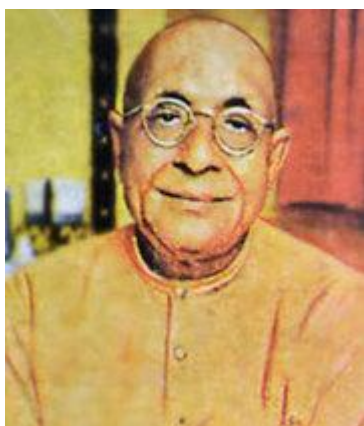
अफ्रीका की विदेशी धरा पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने वाले, वहां पर रहने वाले भारतीयों की आजादी का मार्ग प्रशस्त करने वाले, अफ्रीका में हिंदी को प्रतिष्ठित करने हेतु हिंदी पत्रिका का प्रकाशन और रात्रि में हिंदी की पाठशाला चलाने वाले आर्य संन्यासी स्वामी भवानी दयाल जी आर्य समाज की महान विभूति थे। आपके अभूतपूर्व कीर्तिमानों को अमर बनाए रखने हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वारा वहां पर भवानी दयाल आर्य कॉलेज की स्थापना की है, जहां पर लगातार मानव निर्माण का कार्य सफलतापूर्वक चल रहा है। आप अफ्रीका के सभी देशों में अत्यंत लोकप्रिय और प्रेरक रहे हैं।

अमर स्वामी



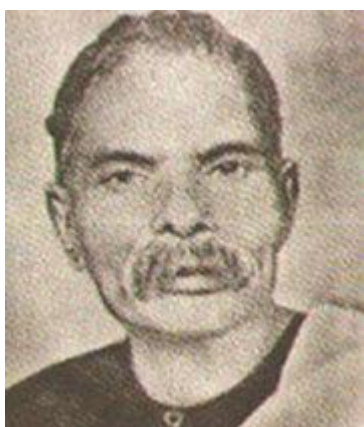
आर्य संन्यासी बनने से पूर्व ठाकुर अमर सिंह के नाम से विख्यात, महर्षि दयानन्द जी के अनुपम शिष्य स्वामी अमर स्वामी सरस्वती जी ने अपनी अद्भुत प्रतिभा से अनेक मतों का गहन ज्ञान प्राप्त कर वैदिक धर्म के प्रचार के साथ वेदोक्त मतानुयायियों से हजारों शास्त्रार्थ कर विजय प्राप्त की। आपने जीवन भर शास्त्रार्थ परम्परा का पोषण किया और अपने वैदिक ज्ञान, पुरुषार्थ एवं कार्यों से ऋषि दयानन्द के यश को बढ़ाया है।

महात्मा आनन्द स्वामी



आर्य समाज की महान विभूति महात्मा आनन्द स्वामी जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य भक्त एवं महान चिंतक, लेखक और आर्य समाज के सफल प्रचारक और विस्तारक थे। आपके सरल, सहज प्रवचनों पर आधारित अनेक पुस्तकें आज भी अनेक विद्वानों के प्रवचन और कथाओं में प्रासंगिक सिद्ध होती हैं। आर्य समाज के प्रेरक नेता एवं 'आर्य गजट' तथा 'मिलाप' आदि पत्रों के आप सफल सम्पादक थे। अविभाजित पंजाब की पत्रकारिता के पितामह तथा संघर्षशील आर्य संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी का मूल नाम 'खुशहालचन्द खुरसंद' था।

नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ



महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणाओं से प्रेरितस्वतंत्रता सेनानी नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ जी आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ता, वैदिक और हिन्दी साहित्य के सृजक, पत्रकार एवं राजनेता थे। आप उत्तर प्रदेश की प्रथम विधानसभा सभा में विधायक रहे। आपने राष्ट्र सेवा और मानव कल्याण के कार्यों को सदैव अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

पंडित रामचन्द्र देहलवी



आर्य समाज के महान शास्त्रार्थ महारथियों में पंडित रामचन्द्र देहलवी का अपना स्थान है। वैदिक धर्म एवं सिद्धान्तों मर्मज्ञ होने के साथ ही वेइस्लाम और ईसाई मत के ग्रन्थों पर भी अधिकार रखते थे। आपकी प्रबल वैदिक योग्यता और ईसाई तथा मुस्लिम ग्रंथों की समीक्षा की विशिष्ट शैली के सामने विरोधी भी शीघ्र झुकाकर हार मान लेते थे। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में आपका योगदान सदैव स्तुत्य रहेगा।

आचार्य उदयवीर शास्त्री



आर्य समाज के सुयोग्य विद्वानों में आचार्य उदयवीर शास्त्री जीसांख्य और न्याय दर्शन के प्रमुख विद्वान थे। उपरोक्त दर्शनों पर आपके शोधपरक प्रेरक भाष्य हेतु सन् 1950 के दशक में आपको भारत के कई राज्य सरकारों द्वारा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1950 में आपको प्रतिष्ठित मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया।

पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय



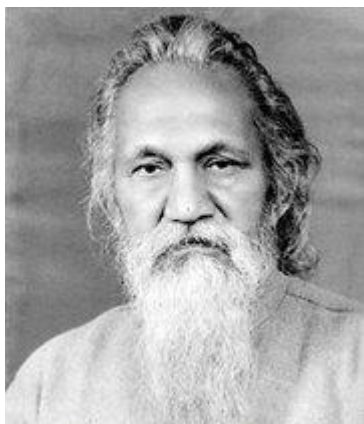
महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और आर्य समाज की मान्यताओं को जन जन तक पहुंचाने वाले पंडित गंगा प्रसाद जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य भी रहे। आपका हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी और संस्कृत भाषाओं पर विशेष अधिकार था। आपका प्रिय विषय दर्शन था। उन्हें 1931 में 'आस्तिकवाद' ग्रन्थ की रचना हेतु मंगला प्रसाद सम्मान प्रदान किया गया।

पंडित चमूपति एम ए



महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार और विस्तार के लिए समर्पित पंडित चमूपति जी आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक थे। आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी व फारसी आदि अनेक भाषाओं के विद्वान थे। आप अच्छे कवि एवं लेखक भी थे। आपने कई भाषाओं में अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना की है।

पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु



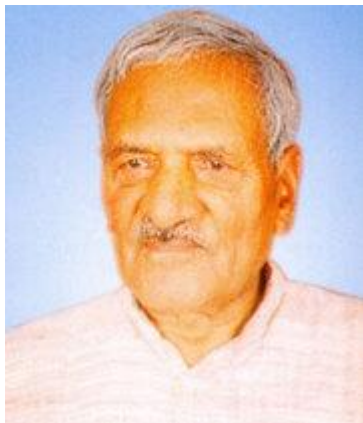
वेदों के मर्मज्ञ विद्वान, पाणिनीय पद्धति से संस्कृत व्याकरण की शिक्षा देने के प्रबल समर्थक, राष्ट्रीय पण्डितकी पदवी से सम्मानित, पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का जन्म जालंधर जिले के मल्लूपोता ग्राम में १४ अक्टूबर १८८२ को हुआ। जिज्ञासु जी ने संस्कृत का अध्ययन अष्टाध्यायी के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी पूर्णानन्द जी के सान्निध्य में किया। व्याकरण में व्युत्पन्न होने के पश्चात् स्वामी सर्वदानन्द द्वारा स्थापित साधु आश्रम हरदुआगंज में आपने आर्ष ग्रंथों का अध्ययन १९२० से प्रारम्भ किया। १९२१ में यह आश्रम गंडासिंह नाला अमृतसर में विरजानन्दाश्रम के नाम से स्थानान्तरित हो गया।

पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति



यज्ञ प्रार्थना "यज्ञरूप प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए" के रचयिता, वेदादि शास्त्रों के सतत स्वाध्याय शील, गूढ़ रहस्यों सरल, सहज, प्रभाव पूर्ण शास्त्रार्थी, उपदेशक पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी मूलतः सिंध प्रान्त के निवासी थे, परन्तु आपका प्रचार क्षेत्र पंजाब रहा। आप आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के उपदेशक भी रहे। आप वैदिक सिद्धांतों के अद्वितीय व्याख्याता, तर्कनिष्णात तथा कर्मकाण्ड प्रेमी भावुक विद्वान् थे। आपके सामने पौराणिक विद्वान थर थर कांपते थे।

डॉ॰ रामनाथ वेदालंकार



आर्य समाज के गौरव आचार्य डॉ॰ रामनाथ वेदालंकार वैदिक साहित्य के ख्याति प्राप्त मर्मज्ञ विद्वान् थे। स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में आपकी शिक्षा दीक्षा पूर्ण हुई। इसी संस्था में ३८ वर्ष वेद - वेदांग, दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र, संस्कृत साहित्य आदि विषयों के शिक्षक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष रहते हुए समय - समय पर आप कुलसचिव तथा आचार्य एवं उपकुलपति का कार्य भी करते रहे। वैदिक एवं संस्कृत साहित्य की सेवा के उपलक्ष्य में आप कई पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं। चारों वेदों का भाष्य करके आपने जो कीर्तिमान स्थापित किया है वह चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेगा।

पण्डित भगवद्धत्त



वेदादि शास्त्रों के अध्येता, अनुसन्धानकर्ता एवं कुशल लेखक पण्डित भगवद्धत्त जी आर्य समाज के सक्रिय और समर्पित अधिकारी थे। आर्य समाज की उच्च संस्था 'परोपकारिणी सभा' के आप निर्वाचित सदस्य और 'विद्वत् समिति' के भी सदस्य थे। आपकी ख्याति एक श्रेष्ठ विद्वान व वक्ता की थी। आर्य समाज के कार्यक्रमों में देश भर में प्रवास भी करते थे। इसी कारण आप 'पण्डित भगवद्धत्त' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

आचार्य रामदेव



सन् १९२३ में देहरादून में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का भाग) की स्थापना करने वाले, त्यागी, तपस्वी आचार्य रामदेव जी का जन्म: ३१ जुलाई १८८१ को हुआ था। आप आर्य समाज के नेता, शिक्षाशास्त्री, इतिहासकार, स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानी एवं महान वक्ता थे। आपने भारतीय इतिहास के सम्बन्ध में मौलिक अनुसन्धान कर हिन्दी में अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ भारतवर्ष का इतिहास प्रकाशित किया था।

आचार्य भद्रसेन



आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान आचार्य पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी के शिष्य, आचार्य भद्रसेन जी महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति अटूट निष्ठा रखते थे। संस्कृत व्याकरण, योगाभ्यास, ध्यान, आसन और प्राणायाम में प्रसिद्धि पाकर आप लोनावालायोग संस्थान वा केन्द्र में रहे। उस संस्थान के महन्त आपको योग संस्थान का मालिक बनाना चाहते थे परन्तु आपने महर्षि दयानन्द जी का अनुकरण करते हुए यह बड़ा प्रस्ताव ठुकरा दिया और आर्यसमाज के उपदेशक व पुरोहित बने और संस्कृत अध्यापन एवं योग प्रशिक्षण के द्वारा समाज की सेवा की।

मुंशी प्रेमचंद



महर्षि दयानंद सरस्वती जी को अपना आदर्श मानने वाले, हिंदी साहित्य एवं उपन्यास लेखन में अत्यंत लोकप्रिय मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 में वाराणसी में हुआ। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के ग्रंथों के प्रकाशन में आपने समर्पित भाव से कार्य किया, आर्य समाज की मान्यताओं के अनुरूप विधवा विवाह के ऊपर भी कुशलतापूर्वक लेखन किया, महर्षि के विचारों और प्रेरक शिक्षाओं की झलकियां आपके साहित्य में अनेक स्थानों पर दृष्टिगत होती हैं। यह अलग विषय है कि मुंशी प्रेमचंद पर लिखने वाले लेखकों ने महर्षि दयानंद और आर्य समाज से उनके जुड़ाव को प्रकाश में नहीं आने दिया किंतु "आपका चित्र" और "आपकी तस्वीर" उनकी श्रेष्ठ कहानियां ही नहीं अपितु उनके जीवन की सच्ची प्रेरणाएं भी हैं। मुंशी प्रेमचंद महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य भक्त और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास के स्वर्णिम अध्याय थे, हैं और चिरकाल तक हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

महाशय राजपाल



महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य भक्त, आर्य समाज की मान्यताओं, सिद्धांतों और परम्पराओं के प्रखर प्रचारक, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के विस्तारक महाशय राजपाल जी का जन्म- 1885 को अमृतसर में हुआ। आप लाहौर के एक आर्यसमाजी नेता, प्रकाशक एवम हिन्दीसेवी और महान तार्किक विद्वान थे। मतांध लोगों द्वारा जब महर्षि दयानंद सरस्वती और योगीराज श्री कृष्ण के ऊपर गलत भाषा और भावना से दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं तब इसके विरोध में रंगीला रसूल को आपने प्रकाशित किया, जिसमें आपको सजा भी हुई और बरी भी हुए, लेकिन 6 अप्रैल 1929 को आपके ऊपर चाकुओं से हमला हुआ और सदा सर्वदा के लिए अमर हो गए।

पंडित आत्माराम अमृतसरी



आर्यसमाज के महान विद्वान पंडित आत्माराम अमृतसरी एक समाजसुधारक थे। सन् 1897 में पं० लेखराम का बलिदान हो जाने के पश्चात् पं० आत्मारामजी ने उनके द्वारा पूरे भारवर्ष में घूमकर संकलित की गई स्वामी दयानन्द विषयक जीवन सामग्री को सूत्रबद्ध कर एक बृहद् ग्रन्थ का रूप प्रदान किया। तथाकथित शूद्रों को वैदिकधर्मी बनाकर भरी सभा में उनके कर-कमलों से आपने अन्न और जल भी ग्रहण किया था। महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज की मान्यताओं, परंपराओं और सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार तथा विस्तार के प्रति आपका अनुराग स्तुत्य और अविस्मरणीय है।

सरला ठकराल



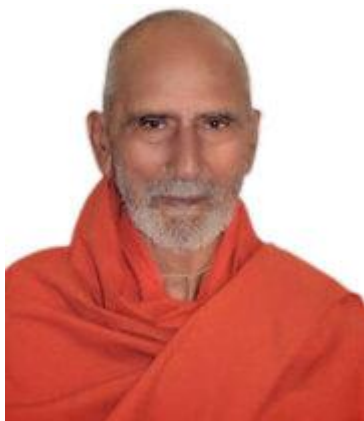
आसमान की ऊंचाइयों पर उड़ान भरने वाली पहली भारतीय महिला पायलट सरला ठकराल का जन्म 8 अगस्त 1914 को दिल्ली में एक आर्यसमाजी परिवार में हुआ था। उच्च शिक्षा के लिए आप दिल्ली से लाहौर गईं और 16 वर्ष की उम्र में आपका विवाह एयर मेल पायलट श्री PD शर्मा से हुआ, उनकी प्रेरणा से आप पहली पायलट बनीं और आपने मात्र 21 वर्ष की उम्र में 1936 में एविएशन पायलट का लाइसेंस प्राप्त किया और साड़ी पहनकर फ्लाइटिंग क्लब में सम्मिलित हुईं तथा हवाई जाहज उड़ाने का कीर्तिमान बनाया, 15 मार्च 2008 को आपका निधन हुआ।

राकेश शर्मा



महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य शिष्य पंडित लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी के सुपौत्र, अशोक चक्र से सम्मानित, भारत के प्रथम और विश्व के 138वें अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा का जन्म 13 जनवरी 1949 को पंजाब राज्य के पटियाला जिले में हुआ था। 1966 में एयर फोर्स में भर्ती होकर 1970 में वायु सेना ज्वाइन करने वाले राकेश शर्मा ने 1971 के युद्ध में "मिग एयरक्राफ्ट" से महत्वपूर्ण सफलता हासिल की थी, 1984 में इसरो और सोवियत संघ के संयुक्त अभियान में 8 दिन तक आप अंतरिक्ष में रहे, 3 अप्रैल 1984 को दो अन्य सोवियत अंतरिक्ष यात्रियों के साथ सओयूट टी-11 में राकेश शर्मा को लांच किया गया, इस उड़ान में और सालयुत 7 अंतरिक्ष केंद्र में उन्होंने भारत की फोटोग्राफी की और अंतरिक्ष से भारत को देखने पर भारत को "सारे जहां से अच्छा" बताया। भारत सरकार ने उनको अशोक चक्र से सम्मानित किया।

आचार्य बलदेव



आर्य समाज की महान विभूति आचार्य बलदेव जी व्याकरणाचार्य, निरुक्ताचार्य, उपनिषद, दर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं वेद - वेदांग के मर्मज्ञ विद्वान थे। आपके सान्निध्य में योग गुरु स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी , आचार्य ज्ञानेश्वर जी, स्वामी विवेकानंद सरस्वती जी, डॉ. सतीश प्रकाश जी, डॉ. शोभानंद जी, डॉ. योगानंद शास्त्री जी, आचार्य आर्यनरेश जी, आचार्य अखिलेश्वर जी, ब्र० आचार्य राजसिंह आर्य जी आदि विद्वानों ने आर्ष शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्राप्त कर आर्य समाज का गौरव विश्व स्तर पर बढ़ाया है और लगातार सेवा कार्यों को आगे से आगे बढ़ा रहे हैं।

स्वामी सत्यपति परिव्राजक



आर्य समाज के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यपति परिव्राजक 1927 में हुआ था। वे योगदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान तथा लेखक, उपदेशक थे। उनका पूर्व नाम 'मुंशीखान' था। उन्हें योग में व्यावहारिक प्रशिक्षण देने के लिए पूरे भारत की यात्रा करने के लिए भी जाना जाता है। आपने गुजरात के अहमदाबाद से लगभग 90 किलो मीटर की दूरी पर रोजड़ नामक स्थान पर एक विस्तृत भूभाग पर दर्शन योग महाविद्यालय की स्थापना की।

यह सूची अपूर्ण है। विस्तृत सूची के लिए www.maharshidayanand.com देखें